कठणाई में जोई जीव तारी, अति घणो निखर अपार।
धणी धमी धमीने थाक्या, पण नेठ नव गलियो निरधार।। ११५ ।।

हे जीव! मैंने तेरी कठोरता देखी, तू बेहद कठोर (निखर) है। धनी कह-कहकर थक गए पर तू निश्चित ही नहीं गला।

॥ प्रकरण ॥ २० ॥ चौपाई ॥ ५२५ ॥

जीवनो प्रबोध

सांभल जीव कहुं वृतांत, तूने एक दऊं द्रष्टांत।
ते तुं सांभल एके चित, तूंने कहूं छूं करीने हित।। १ ।।

हे जीव! एक कथा सुनो, मैं एक दृष्टान्त तुझे देती हूं। इसको ध्यान से सुनना, मैं तेरी भलाई के वास्ते कहती हूं।

परीछिते एम पूछ्यो प्रश्न, सुकजी मूने कहो वचन।
चौद भवन मांहें मोटो जेह, मुझने उतर आपो तेह।। २ ।।

राजा परीक्षित ने शुकदेवजी से एक प्रश्न पूछा कि चौदह लोकों में सबसे बड़ा कौन है? इसका मुझे उत्तर दो।

त्यारे सुकजी एम बोल्या प्रमाण, ग्रहजो वचन उत्तम करी जांण।
चौद भवनमां मोटो तेह, मोटी मतनो धणी छे जेह।। ३ ।।

तब शुकदेवजी ने इस प्रकार कहा कि इन वचनों को अच्छी तरह ग्रहण करना—चौदह लोकों में वही बड़ा है, जो बड़ी बुद्धि का मालिक है।

वली परीछितें पूछ्यूं एम, जे मोटी मत ते जाणिए केम।
मोटी मतनो कहूं विचार, ग्रहजो परीछित जाणी सार।। ४ ।।

फिर परीक्षित ने इस प्रकार पूछा कि यह कैसे जाना जाए कि बुद्धि किसकी बड़ी है? शुकदेवजी कहते हैं कि मैं बड़ी बुद्धि की पहचान कराता हूं। तुम इस सार को समझ कर ग्रहण करना।

मोटी मत ते कहिए एम, जेहेना जीवने वल्लभ श्री कृष्ण।
मतनी मततां ए छे सार, वली बीजी मतनो कहूं विचार।। ५ ।।

बड़ी बुद्धि वाला उसी को ही कहा जाए जिसके जीव के प्रीतम श्री कृष्णजी अक्षरातीत हैं। बड़ी बुद्धि के बारे में सबका यही विचार है, फिर दूसरी बुद्धि के बारे में भी विचार बताता हूं।

एह विना जे बीजी मत, ते तूं सर्वे जाणे कुमत।
कुमत ते केही केहेवाय, नीछारा थी नीची थाय।। ६ ।।

इसके बिना जो दूसरे लोगों की बुद्धि है, उन सबकी मायावी बुद्धि (कुमति) समझना। परीक्षित कहता है कि कुमति किसको कहते हैं? शुकदेवजी कहते हैं कि नीच से नीच जो बुद्धि हो उसे कुमति कहते हैं।

एवडो तेहेनो स्यो वृतांत, तेहेनुं कांइक कहूं द्रष्टांत।
सांभल परीछित कहूं वली तेह, एक मोटी मतनो धणी छे जेह।। ७ ।।

परीक्षित पूछते हैं कि इस कुमति की क्या हकीकत है? शुकदेवजी कहते हैं कि उसका कुछ दृष्टान्त देता हूं। हे परीक्षित! सुनो, मैं फिर से कहता हूं और एक बड़ी बुद्धि के मालिक की पहचान कराता हूं।

Nijanand App

मोटी मत वल्लभ धणी करे, ते भवसागर खिण मांहें तरे।
तेहेने आडो न आवे संसार, ते नेहेचल सुख पामे करार।। ८ ।।

बड़ी बुद्धि वही है जो श्री कृष्णजी अक्षरातीत को प्रीतम माने, वह एक पल में भवसागर से पार हो जाएगा। उसे संसार आड़े नहीं आएगा। वह अखण्ड सुख की प्राप्ति करेगा (योगमाया में चला जाएगा)।

ओली कुमत कहिए तेणे सूं थाए, अंध कूप पड्यो पचे मांहें।
ए सुकजीना कह्या वचन, जीव विमासी जुए जोपे मन।। ९ ।।

परीक्षित पूछता है कि कुमति (नीच बुद्धि) किसे कहते हैं? उससे क्या होता है? शुकदेवजी उत्तर देते हैं कि जैसे अन्धा कुएं में पड़ा-पड़ा सड़ता है, उसी प्रकार कुमति वाला भवसागर के जन्म-मरण में पड़ा सड़ता रहता है। इसलिए हे परीक्षित! जीव से विचार कर मन में अच्छी तरह देख।

विमासणनी नहीं ए वात, तारो निरमाण बांध्यो स्वांसो स्वांस।
तेहेनो पण नथी विस्वास, जे केटला तूं लइस ए स्वांस।। १० ।।

हे परीक्षित! यह चिन्ता करने की बात नहीं है। तेरा जीवन सांसों की गिनती से बंधा है। यह भी विश्वास नहीं है कि कितनी सांसें बाकी हैं जो तुझे लेनी हैं।

एक खिणमां कई वार आवे जाय, त्यारे कात्यूं वीछ्यूं कपासिया थाय।
ते माटे सुणजे रे जीव सही, मोटी मत में तुझने कही।। ११ ।।

यह सांस एक पल में कई बार आती-जाती है, जैसे कातने से पहले रूई धुनी जाती है तब कहीं उसका फल (बिनौला) निकलता है। इसलिए हे जीव! सुन, बड़ी बुद्धि की पहचान तुझे करा दी है।

जे जोगवाई छे तारे हाथ, ते आंणी जिभ्याए केही कहूं वात।
आटला दिवस ते जाण्यूं नव जाण, मूरख करे तेम कीधुं अजांण।। १२ ।।

हे जीव! यह मनुष्य तन जो तेरे हाथ में है इसकी हकीकत जबान से कैसे कहूं? इतना जीवन तूने ऐसे ही गंवा दिया। जैसा मूर्ख अज्ञानता में करते हैं, वैसा तूने किया।

हवे ए वचन विचारजे रही, सुकजी पाय साख पुरावी सही।
हवे एकवचन कहूं सुणजे जीव सही, वालाजीना चरणतूं रेहे जे ग्रही।। १३ ।।

हे जीव! शुकदेवजी की जो गवाही हमने सुनाई है, उन वचनों को विचार कर देखो, एक बात खास कर सुन लो कि वालाजी के चरणों को पकड़ कर रहना।

सुणजे वली धणीना वचन, वाणी कहे ते ग्रहजे मन।
रखे पाणीवल विहिलो थाय, आवो नहीं लाभे रे दाय।। १४ ।।

अब फिर से धनी के वचनों को सुनो। जो वचन कहे हैं उन्हें मन में धरो। इनसे एक क्षण के लिए अलग मत हो। ऐसा मौका दुबारा नहीं मिलेगा।

भरम भाजवा कह्या वचन, मोटीमत ग्रहे जेम थाय धन धन।
हवे ओलखजे जोपे करी, भरम भ्रांत मूके परहरी।। १५ ।।

तुम्हारे संशय मिटाने के लिए ही यह वचन कहे हैं। बड़ी बुद्धि को ग्रहण कर लेना जिससे तू धन्य हो जाए। अच्छी तरह से अब पहचान कर भ्रम और भ्रान्ति को छोड़ देना।

Nijanand App

मुख मांहेंथी वचन कह्या तो सूं, जो हजी न छेक निकलियो तूं।
आगे किव मांडी छे अनेक, तें पण कांइक कीधी विसेक।। १६ ।।

केवल मुख से कह देने से क्या हुआ? अभी तक तूने अपनी कमियों को नहीं निकाला (अर्थात् दुनियां के देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना या व्रत, इत्यादि कुरीतियां नहीं छोड़ीं)। आगे भी कई लोगों ने कविता की रचना कर इसे समझाया है। फिर भी तेरे लिए विशेष रूप से कुछ अधिक स्पष्ट कर दिया।

पण सांचो तो जो समझे जीव, तो वाणी भले मुखथी कही पीउ।
ए वाणी नथी कांई किवना जेम, मारा जीवने खीजवा कह्या में एम।। १७ ।।

सच्चा जीव तो वही है जो पिया के मुखारबिन्द की वाणी को समझे। यह वाणी कोई कविता नहीं है। यह तो मैंने जीव को फटकारने के लिए कही है।

जीव छे मारो अति सुजाण, ते धणीना चरण नहीं मूके निरवाण।
पण सांचो तो जो करे प्रकास, जोत जई लागी आकास।। १८ ।।

मेरा जीव तो जानकार है। वह अब धनी के चरण को निश्चित ही नहीं छोड़ेगा, पर जीव तो सच्चा तभी कहलाएगा जब इस ज्ञान की ज्योति के प्रकाश को आसमान तक पहुंचाएगा।

आंणी जोगवाईए तो एम थाय, चौद भवनमां जोत न समाय।
एम अमें न करूं तो बीजो कोण करे, धणी अमारे काजे बीजी दाण देह धरे।। १९ ।।

यह समय तो ऐसा मिला है कि चौदह लोकों में ज्ञान की रोशनी समाती नहीं। इस तरह ज्ञान का प्रकाश हम न करेंगे तो दूसरा कौन करेगा? हमारे वास्ते ही धनी ने दूसरी बार तन धारण किया है।

एणी केमे नव थाय सरम, एणी द्रष्टे केम न थाय नरम।
जीव छे मारो खरी वस्त, ते कां न करे अजवालूं अत।। २० ।।

ऐसा जानकर भी इनको शर्म क्यों नहीं आती? इनकी दृष्टि नरम क्यों नहीं होती? (अहंकार छोड़कर झुकते क्यों नहीं)। मेरा जीव सच्चा है तो वह वाणी का प्रकाश क्यों नहीं करे?

श्री सुंदरबाईने चरणज थकी, वली मोसूं गुण कीधां बाई गुणवंती।
मारे माथे दया रतनबाईनी घणी, एणी कृपाए जोपे ओलखीस धणी।। २१ ।।

श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) के चरणों की कृपा से और फिर मेरे ऊपर गुणवंतीबाई (गोवर्धन भाई) ने कृपा की तथा मेरे ऊपर रतनबाई (बिहारीजी) ने तो बहुत ही दया की। जिनकी कृपा से मैंने अपने धनी को पहचाना।

एहेनी दयाए जोत एम करीस, चरण धणीना चितमां धरीस।
इंद्रावती चरणे लागे आधार, सुफल फेरो करूं आवार।। २२ ।।

इनकी दया से धनी के चरण चित्त में धारण करूंगी, संसार में ज्ञान की ज्योति का प्रकाश करूंगी। इन्द्रावती धनी के चरणों में लगकर कहती है कि इस प्रकार मैं अपना आगमन सफल करूंगी।

।। प्रकरण ।। २१ ।। चौपाई ।। ५४७ ।।

हवे द्रष्ट उघाडी जो पोतानी, निरख धणो श्री धाम।
प्रेमल करी पोते आप संभारी, बांध गोली प्रेम काम।। १ ।।

अब आप अपनी दृष्टि खोलकर धाम के धनी की पहचान करो (पहचान कर देखो)। फिर इनकी पहचान करके अपने को संभालो और प्रीतम के प्रेम को हृदय में लेकर धनी से एक रस हो जाओ।

Nijanand App